भावी नेता

अनुराधा सपरा, कक्षा-VI
पुत्री श्री तिलकराज सपरा

आज देश की युवा पीढ़ी में नेता बनने की होड़ सी मची हुई है। अधिकांश युवा वर्ग नेता बनना चाहता है। वह नेता बन कोई न कोई चुनाव जीतना चाहता है जिससे सत्ता के गलियारों का सुख ले सके। उसे सफलता का सबसे सरल एवं छोटा रास्ता यही नजर आता है। वह इसको हासिल करने के लिए कुछ भी करने को तैयार है । इसका मुख्य कारण आज की राजनीति का ग्लैमर है। आज हर छोटा-बड़ा नेता ए.सी. गाडी में नजर आता है। किसी भी विभाग में चले जाओ उसके कार्यो को प्राथमिकता दी जाती है। उसके दायें-बायें, आगे–पीछे उसकी हॉ में हॉ मिलाने वालों की लम्बी लाइन होती है। चौराहों पर अथवा ट्रेफिक जाम में उसकी गाड़ी को पहले निकाला जाता है। वह आम आदमी के लिए कुछ न कुछ करने वाला आम आदमी का नेता होता है। उसे आम आदमी की समस्या से कोई लगाव नहीं होता है। जैसे ही वह चुनाव जीतकर सभासद, विधायक, सांसद अथवा मंत्री बनता है, वह आम आदमी को भूल जाता है, उसे याद रहता है तो अपने सगे संबंधी एवं पिछलग्गुओं की टीम, उसका मुख्य लक्ष्य अपना एवं अपने साथियों का विकास करना रह जाता है ।

आज हमारे देश में चारों ओर भ्रष्टाचार व्याप्त है कहीं जानवरों के लिए उपलब्ध चारा खाया जा रहा है तो कहीं स्कूलों में बच्चों के लिए मिड-डे मील को डकारा जा रहा है। सरकारी योजनाओं का लाभ प्रभावशाली लोगों को मिल रहा है। गरीब मरीजों की दवाईयों को बाजार में बेचा जा रहा है। अपात्र लोगों को बी.पी.एल. कार्ड दिये जा रहे हैं, ऐसा करने वालों के सिर पर किसी न किसी नेता का हाथ अवश्य होता है, परन्तु क्या ऐसे नेताओं से देश का भला हो सकेगा? क्या कभी हम विकसित देश कहला पायेंगे? क्या इस देश के हर भूखे को भरपेट भोजन मिल पायेगा? क्या किसी मरीज को उचित चिकित्सा के अभाव में मरना तो नहीं पड़ेगा? क्या किसी कन्या को जन्म से पूर्व ही मार तो नहीं दिया जायेगा? चरित्रहीन व भ्रष्ट नेताओं के सहारे ऐसा शायद ही संभव हो । देश को ऐसा नेता चाहिए जो देश को पूर्णत: समर्पित हो ।

मैं इतिहास के एक प्रेरक प्रसंग को भावी नेताओं के समक्ष रखना चाहती हूँ जो निम्न है:-

प्रजा के प्रति समर्पण

"हुक्म महाराज का, शाही के कोठार हर आदमी के लिये खुले हैं" जो चाहे वहाँ आकर एक बार में जितना अन्न ले जा सके उठा ले जाये और इस जानलेवा अकाल से अपने परिवार की रक्षा करे।" नगाड़ा बजाकर एक मिरासी पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह की आज्ञा का सब जगह ऐलान कर रहा था। कारण इस साल पूरे पंजाब में जबर्दस्त अकाल पड़ गया था। खेतों में अन्न का एक दाना नहीं उपजा था, ऐसे में रणजीत सिंह ने राजधर्म निभाया। तय किया कि किसी को राज्य में भूखे न मरने दिया जाये फलत: शाही कोठारों से अपने लिए अन्न उठा लाने के लिए प्रजा की भीड़ उमड़ पड़ी । गॉव–शहरों से अकाल पीड़ितों का तॉता लग गया ।

लाहौर में ही एक वृद्ध सज्जन खासे खाते-पीते गृहस्थ थे लेकिन अकाल ने उनके परिवार को भी भूखा मरने की नौबत ला दी। जीवन में कभी किसी के आगे हाथ न पसारा था, न ही किसी से

दान खैरात लेने का उनका स्वभाव था, परन्तु अब क्या करें, मरता क्या न करता। बच्चों के सूखे उदास चेहरे उन्हें विवश कर बैठे और तब एक अंधेरी रात वे भी चादर लेकर शाही कोठारों की तरफ चल पड़े। शाही कोठारों में अनाज अभी भी भरा था, जो चाहे अनाज ले जाये, कोई पूछताछ, रोक-टोक या लिखा पढ़ी नहीं। आखिर उस सज्जन ने चादर जमीन पर फैलाई और बड़े संकोच से थोड़ा सा अनाज उसके एक सिरे में बाँधा। वृद्ध थे, कमजोर थे। ज्यादा अनाज लेकर घर तक चल पाना भी उनके लिए दुश्कर था। शर्म संकोच था सो अलग, अभी वे छोटी सी गठरी उठा भी न पाये थे तनीदार मोटा अंगरखा पहने, सिर पर पगड़ी बाँधे एक आदमी वहाँ आया, पूछने लगा क्यों भाई आपने तो बहुत कम अनाज लिया। भला इससे क्या होगा?

वृद्ध संकुचाते, शरमाते बोला, "जी हाँ सरदार जी। दरअसल मैं बूढा लाचार आदमी अधिक अनाज ढो नहीं सकता, फिर इस अकाल के वक्त हम लोग थोड़ा–थोड़ा ही लें तो ठीक होगा। सबका काम चलेगा और फिर भी जरूरतमन्दों के लिए शाही कोठारों में अनाज रहेगा। यह सुनकर उस आगन्तुक ने वृद्ध सज्जन की वह छोटी गठरी खोल डाली पूरी चादर ठीक से भूमि पर बिछाई और ढेर सा अन्न जितना कि चादर में समा सकता था बाँधा। इस पर वे महाशय नहीं-नहीं करके उसे मना करने लगे बोले सरदार जी आप यह क्या कर रहे हैं। मैं भला इतना अनाज कैसे ले जा सकता हूँ। किसी को मजदूरी देने की मेरी सामर्थ्य नहीं। भारी बकुचा उठाकर सिर पर रखता हुआ वह अजनबी आदमी कहने लगा फिक्र मत करो महाराज ने मुझे हुक्म दे रखा है कि जो आदमी गठरी खुद न उठा सके उसके घर में ही उसका अनाज पहुंचा दूँ। खैर, वृद्ध हिचकता ही रहा वह व्यक्ति अनाज का बोझ उठाकर उसके साथ चल दिया।

घर आया तो उस अजनबी ने देखा द्वार पर दीप जलाकर दो बालक उस बूढे की राह देख हैं। स्पष्ट ही वे बच्चे चिन्तातुर दिख रहे थे। उस अजनबी ने पूछा भाई बच्चे किसके हैं? घर में कोई क्या बड़ा लड़का नहीं जो आपकी मदद करता, खुद आकर अनाज ले जाता, वृद्ध बोला सरदार जी दोनों मेरे पोते हैं, एक लड़का था जो काबुल में लड़ाई में मारा गया अब ये हैं और बहू है उसका स्वर दु:ख से भारी हो गया था। अजनबी ने कहा भाई जी आप धन्य हैं आपके घर पर ऐसा बेटा जन्मा जो देश की खातिर शहीद हो गया। आपका घर तो हमारे लिए तीर्थ की तरह पवित्र है। उसकी ओजस्वी वाणी सुनकर जब वृद्ध ने दीये की रोशनी में उसका चेहरा देखा तो सन्न रह गया, उसकी गठी हुई काठी, रोबीली दाढ़ी मूछें और तेजस्वी वाणी से वृद्ध को लगा यह कौन आ गया उस गरीब के द्वार। बच्चों से कहा "इन्हें माथा टेको"। खुद भी प्रणाम करने लगा कहा महाराज यह क्या किया, आपने, मुझसे बड़ा गुनाह हो गया जो आपसे मैने बोझा उठवाया, नहीं भाई जी। गुनाह नहीं यह तो मेरा भाग्य है कि बन्दे से कुछ सेवा हो सकी आपकी और सुनिये आज से मैं ही आपका बड़ा लड़का हूँ और चलिये आप और ये बच्चे हमारे मेहमान रहेंगे, जब तक मेरी जिन्दगी है। ये थे महाराजा रणजीत सिंह।

यदि हमारे देश में ऐसे समर्पित नेता हो जाएं तो देश अवश्य ही विकास की गाड़ी पर दौड़ सकता है। देश से भ्रष्टाचार जड़ से खत्म हो सकेगा इसके लिए सरकार को भी चाहिए कि वह सांसद, विधायक बनने के लिए कोई योग्यता निर्धारित करें। उस योग्यता में इनके लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम अवश्य होना चाहिए जिसमें इनको राष्ट्र की समस्याओं से अवगत कराया जा सके तथा उनको राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्य का बोध हो सके।